पाठ 43

1. परमेश्वर ने इस्राएल के दस गोत्रों को कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने अश्शूरियों को इस्राएल के दस गोत्रों को जीतने के लिए भेजा, और अश्शूरियों ने उन्हें अपना दास बना लिया।

2. परमेश्वर ने इस्राएल के दस गोत्रों को दण्ड देने के बाद, यहूदा के दो गोत्रों को परमेश्वर ने कैसे दण्ड दिया?

-परमेश्वर ने यहूदा के दो गोत्रों को जीतने के लिए बेबीलोनियों को भेजा, और बेबीलोनियों ने उन्हें अपना दास बना लिया।

3. बाबुलियों ने यरूशलेम नगर को कैसे नष्ट किया?

-उन्होंने मंदिर में आग लगा दी।

-उन्होंने सारे यरूशलेम को फूंक दिया।

-उन्होंने शहर के चारों ओर की दीवार को तोड़ दिया।

4. यहूदा के लोगों ने यरूशलेम लौटने पर क्या किया?

-उन्होंने मंदिर का पुनर्निर्माण किया।

-उन्होंने यरूशलेम शहर का पुनर्निर्माण किया।

-उन्होंने यरूशलेम नगर के चारों ओर की शहरपनाह को फिर से बनाया।

5. यहूदा के लोगों के लिए नया नाम क्या था जो यरूशलेम लौट आए थे?

-यहूदी।

6. यहूदियों को जीतने के लिए परमेश्वर ने किन दो अन्य लोगों को भेजा?

-यूनानी और रोमन।

7. रोमन किसकी पूजा करते थे?

-उन्होंने अनेक प्रतिमाओं की पूजा की।

-उन्होंने अपने राजा सीजर की भी पूजा की।

8. शास्त्री कौन थे?

-शास्त्री यहूदी नेता थे जिन्होंने परमेश्वर के वचनों को लिखा था।

9. फरीसी कौन थे?

-फरीसी यहूदी नेता थे जिन्होंने परमेश्वर के वचनों की शिक्षा दी थी।

10. सदूकी कौन थे?

-सदूकी यहूदी नेता थे जो अमीर थे और मंदिर की रखवाली करते थे।

11. आराधनालय क्या थे?

-आराधनालय वे घर थे जहाँ यहूदी मूसा के लेखों को पढ़ने और चर्चा करने के लिए मिलते थे।

12. उस समय, क्या कोई यहूदी थे जो परमेश्वर में विश्वास करते थे?

-हां।

-कुछ ऐसे भी थे जो परमेश्वर में विश्वास करते थे।

-परमेश्वर ने यहूदियों से बात करने के लिए कई नबियों को भेजा।

-अंतिम भविष्यद्वक्ताओं में से एक जिसे परमेश्वर ने यहूदियों से बात करने के लिए भेजा था, वह था मलाकी।

-मलाकी ने यहूदियों से कहा कि परमेश्वर उन्हें नहीं भूले हैं, और उद्धारकर्ता को भेजेंगे।

-मलाकी के मरने के बाद, परमेश्वर ने 400 साल तक यहूदियों से बात नहीं की।

-जबकि अधिकांश यहूदी ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे, उनमें से कुछ ईश्वर के उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

-दो यहूदी जो उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे थे, वे थे जकर्याह और उनकी पत्नी एलिजाबेथ।

आइए पढ़ें लूका 1:5-6

5-यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय में जकर्याह नाम एक याजक था, जो अबिय्याह के याजक वर्ग का था; उसकी पत्नी इलीशिबा भी हारून की वंशज थी।

6-वे दोनों परमेश्वर के साम्हने सीधे थे, और यहोवा की सब आज्ञाओं और नियमों को निर्दोष मानते थे।

-जकर्याह एक याजक था, और जकर्याह और उसकी पत्नी इलीशिबा दोनों ही परमेश्वर में विश्वास करते थे।

-लेकिन जकर्याह और उसकी पत्नी को एक समस्या थी।

आइए पढ़ें लूका 1:7

7-परन्तु उनके कोई सन्तान न हुई, क्योंकि इलीशिबा बांझ थी; और वे दोनों वर्षों से साथ-साथ थे।

-जकर्याह और इलीशिबा की समस्या क्या थी?

-उनके कोई संतान नहीं थी।

-उनके कोई बच्चे क्यों नहीं थे?

-क्योंकि एलिजाबेथ बांझ थी।

-क्योंकि जकर्याह और इलीशिबा दोनों ही बहुत बूढ़े थे।

-क्योंकि जकर्याह एक याजक था, उसका काम यरूशलेम के मन्दिर में सेवा करना था।

आइए पढ़ें लूका 1:8-10

8-एक बार जब जकर्याह का दल काम पर था, और वह परमेश्वर के साम्हने याजक का काम कर रहा था,

9-याजकपद की रीति के अनुसार चिट्ठी के द्वारा उसे चुना गया, कि यहोवा के भवन में जाकर धूप जलाए।

10-और जब धूप जलाने का समय आया, तो सब इकट्ठे हुए उपासक बाहर प्रार्थना कर रहे थे।

-जिस दिन जकर्याह परमेश्वर के लिए धूप जलाने के लिए मंदिर के पवित्र कक्ष में गया, उस दिन उसे कुछ हुआ।

-जकर्याह के साथ क्या हुआ जब वह मंदिर में था?

-जकर्याह को परमेश्वर का एक दूत दिखाई दिया।

आइए पढ़ें लूका 1:11-14

11-तब यहोवा का एक दूत उसे दिखाई दिया, जो धूप की वेदी के दायीं ओर खड़ा था।

12-जब जकर्याह ने उसे देखा, तो वह चौंक गया और भय से जकड़ गया।

13-परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे जकर्याह, मत डर; आपकी प्रार्थना सुन ली गई है। तेरी पत्नी इलीशिबा तेरे एक पुत्र उत्पन्न करेगी, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।

14-वह तुम्हारे लिये आनन्द और आनन्द का कारण होगा, और उसके जन्म के कारण बहुत लोग आनन्दित होंगे।"

-स्वर्गदूत ने जकर्याह से क्या कहा?

-स्वर्गदूत ने कहा कि परमेश्वर जकर्याह को एक पुत्र देने जा रहा है, और उसका नाम यूहन्ना होगा।

-फिर स्वर्गदूत ने बेटे के बारे में क्या कहा कि परमेश्वर जकर्याह को देने जा रहा है?

आइए पढ़ें लूका 1:15-17

15-स्वर्गदूत ने कहा, "क्योंकि वह यहोवा की दृष्टि में महान होगा। उसे दाखमधु या अन्य किण्वित पेय कभी नहीं लेना चाहिए, और वह जन्म से ही पवित्र आत्मा से भर जाएगा।

16-इस्राएल के बहुत से लोगों को वह अपके परमेश्वर यहोवा के पास फिर ले आएगा।

17-और वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में यहोवा के आगे आगे चलेगा, कि पितरोंके मन को उनकी सन्तान की ओर, और आज्ञा न माननेवालोंको धर्मियोंकी बुद्धि की ओर फेर दे, कि एक प्रजा को यहोवा के लिथे तैयार करे।"

-स्वर्गदूत ने कहा कि जकर्याह का पुत्र, यूहन्ना, लोगों को आने वाले उद्धारकर्ता के लिए तैयार करेगा।

-स्वर्गदूत ने आने वाले उद्धारकर्ता को क्या कहा?

-परमेश्वर।

-परमेश्वर कौन है?

-परमेश्वर।

-देवदूत ने कहा कि आने वाला उद्धारकर्ता स्वयं परमेश्वर, परमेश्वर होगा।

-इसके बाद जकर्याह की पत्नी इलीशिबा गर्भवती हो गई।

आइए पढ़ें लूका 1:24-25

24- इसके बाद उनकी पत्नी एलिजाबेथ गर्भवती हुईं और पांच महीने तक एकांत में रहीं।

25- "यहोवा ने मेरे लिए यह किया है," उसने कहा। "इन दिनों में उस ने अपक्की कृपा की है, और लोगोंके बीच में से मेरा अपमान दूर किया है।"

-बाद में परमेश्वर ने मरियम नाम की एक कुंवारी के पास एक फरिश्ता भेजा।

आइए पढ़ें लूका 1:26-31

26-छठवें महीने में परमेश्वर ने जिब्राईल दूत को गलील के नासरत नगर में भेजा,

27-एक कुंवारी से दाऊद के वंशज यूसुफ नाम के एक आदमी से शादी करने की प्रतिज्ञा की। कुँवारी का नाम मरियम था।

28-स्वर्गदूत उसके पास गया और कहा, "नमस्कार, हे अति कृपालु! यहोवा तुम्हारे साथ है।"

29-मरियम उसकी बातों से बहुत परेशान थी और सोच रही थी कि यह किस तरह का अभिवादन हो सकता है।

30-परन्तु स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम, मत डर, तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह है।

31-और तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, और उसका नाम यीशु रखना।"

-स्वर्गदूत ने मरियम से क्या कहा?

-देवदूत ने मरियम से कहा कि परमेश्वर ने उसे आने वाले उद्धारकर्ता को जन्म देने के लिए चुना है।

-क्या परमेश्वर उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को भूल गया था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने उद्धारकर्ता को भेजने के अपने वादे को क्यों याद किया?

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों से प्यार करता है।

-क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान से बचाना चाहता है।

-परमेश्वर ने मरियम को क्यों चुना?

-क्या मरियम आदम और हव्वा की संतान थी?

-हां।

-क्या सभी लोगों की तरह मरियम का जन्म पाप में हुआ था?

-हां।

-परमेश्वर ने मरियम को क्यों चुना?

-क्योंकि मरियम परमेश्वर में विश्वास करती थी।

-क्योंकि मरियम उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रही थी।

-मरियम के बेटे का नाम क्या होना चाहिए था?

-यीशु।

-"यीशु" नाम का क्या अर्थ है?

-"यीशु" नाम का अर्थ उद्धारकर्ता या उद्धारकर्ता है।

-मरियम के बेटे, आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में स्वर्गदूत ने और क्या कहा?

आइए पढ़ें लूका 1:32

32-स्वर्गदूत ने कहा, "वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा।"

-दूत ने कहा कि मरियम का पुत्र परमप्रधान का पुत्र होगा।

-स्वर्गदूत का क्या अर्थ था कि मरियम का पुत्र परमप्रधान का पुत्र होगा?

-मरियम का पुत्र परमेश्वर का पुत्र होगा।

-मरियम का पुत्र परमेश्वर का पुत्र कैसे होगा?

-क्या परमेश्वर ने बेटे को जन्म दिया?

-नहीं।

-क्या आपको याद है कि ईश्वर एक है, फिर भी वह तीन व्यक्ति है?

-परमेश्वर पिता परमेश्वर, उद्धारकर्ता परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

-परमेश्वर पिता और परमेश्वर पवित्र आत्मा परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर उद्धारकर्ता परमेश्वर को भेज रहे थे।

-क्या मरियम का पुत्र ईश्वर या मनुष्य होना था?

-मरियम का पुत्र पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य दोनों होगा।

-मरियम के बेटे, आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में स्वर्गदूत ने और क्या कहा?

आइए पढ़ें लूका 1:32-33

32-स्वर्गदूत ने कहा, यहोवा परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा,

33 और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; उसका राज्य कभी समाप्त नहीं होगा।”

-देवदूत ने कहा कि मरियम का पुत्र, आने वाला उद्धारकर्ता, राजा डेविड का वंशज होगा।

-उद्धारकर्ता को दाऊद के वंश से क्यों जन्म लेना पड़ा?

-क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद से वादा किया था कि उद्धारकर्ता उसके वंशजों में से एक होगा।

-क्योंकि आने वाला उद्धारकर्ता राजा दाऊद का वंशज होगा, परमेश्वर उसे इस्राएल पर राजा और हमेशा के लिए राजा बना देगा।

-फिर मरियम ने देवदूत से क्या पूछा?

आइए पढ़ें लूका 1:34

34- "यह कैसे होगा," मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, "जब से मैं कुंवारी हूं?"

-मरियम का सवाल क्या था?

-मरियम ने पूछा कि अगर वह अभी भी कुंवारी है तो उसे एक बेटा कैसे हो सकता है।

-देवदूत ने क्या जवाब दिया?

आइए पढ़ें लूका 1:35

35-स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और परमप्रधान की शक्ति तुम पर छाया करेगी। इसलिए जो पवित्र उत्पन्न होगा, वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।"

-देवदूत ने क्या जवाब दिया?

-देवदूत ने कहा कि परमेश्वर पवित्र आत्मा एक चमत्कार करेगा, और मरियम गर्भवती हो जाएगी।

-मरियम के पुत्र का जन्म मानव पिता या माता के बीज के बिना होना था।

-क्यों मरियम का पुत्र मानव पिता और माता के बीज के बिना पैदा हुआ था?

-ताकि वह आदम और हव्वा के पाप के बिना पैदा हो।

-ताकि वह पाप के बिना सिद्ध पैदा हो।

-क्योंकि परमेश्वर पुत्र एक मानव के रूप में पैदा होगा लेकिन पाप के बिना, उसके पास मानव पिता या माता का बीज नहीं होगा।

-मरियम का पुत्र अकेला परमेश्वर का बीज होगा।

-फिर स्वर्गदूत ने मरियम से क्या कहा?

आइए पढ़ें लूका 1:36-37

36-स्वर्गदूत ने कहा, "तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बुढ़ापे में एक बच्चा होने वाला है, और वह जो बांझ कहलाती थी, उसका छठा महीना है।

37-क्योंकि परमेश्वर से कुछ भी असम्भव नहीं है।"

-यहाँ स्वर्गदूत ने क्या कहा:

-जैसे एलिजाबेथ, एक बहुत बूढ़ी, बांझ महिला के लिए बच्चा पैदा करना असंभव था, लेकिन परमेश्वर ने उसे एक बेटा दिया था।

-तो मरियम, एक कुंवारी, के लिए बच्चा पैदा करना भी असंभव था, लेकिन परमेश्वर ने उसे एक बेटा भी दिया था।

-परमेश्वर कुछ भी कर सकते हैं।

-परमेश्वर के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।

-फिर मरियम ने क्या जवाब दिया?

आइए पढ़ें लूका 1:38

38-“मैं यहोवा की दासी हूँ,” मरियम ने उत्तर दिया। "जैसा आपने कहा है वैसा ही मेरे साथ भी हो।" तब देवदूत उसे छोड़कर चली गई।

-क्योंकि मरियम ईश्वर में विश्वास करती थी, ईश्वर ने उसे आने वाले उद्धारकर्ता यीशु की माँ बनने के लिए चुना।

-क्या यीशु को वादा किया गया उद्धारकर्ता होना था?

-हां।

-क्या यीशु ही वह उद्धारकर्ता था जिसे परमेश्वर ने सबसे पहले अदन की वाटिका में आदम और हव्वा से वादा किया था?

-हां।

-क्या यीशु ही वह उद्धारकर्ता था जिसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, याकूब और सभी लोगों से वादा किया था?

-हां।